Popper, Karl Raimund

कार्ल रायमुंड पॉपर (1902-1994)

प्रसिद्ध दार्शनिक **कार्ल रायमुंड पॉपर** का जन्म वियना (आस्ट्रिया) में हुआ था, किन्तु बाद में वे ब्रिटेन में स्थाई रूप में बस गये। वे सन् 1945 में 'लंदन स्कूल ऑफ इक्नामिक्स' में आ गये। यहां वे 1969 में सेवानिवृति तक तर्कशास्त्र और वैज्ञानिक विधि के आचार्य रहे। पॉपर के अध्ययन-अनुसंधान के प्रमुख विषय सामाजिक दर्शनशास्त्र और विज्ञान के दर्शन रहे हैं। सत्य के उद्घाटन और प्रस्थापना के लिये विज्ञान का प्रयोग कैसे किया जाना चाहिए, विज्ञान के दर्शन से जुड़े इस विषय में उन्होंने अपनी प्रसिद्ध **'मिथ्याकरणवाद'** की अवधारणा प्रस्तुत की है। इस अवधारणा के अनुसार, **विज्ञान का प्रमुख लक्ष्य प्राक्कल्पनाओं की रक्षा करना नहीं अपितु उनका खंडन करना है।** विचारधारा (आइडिऑलॉजी) के विपरीत, विज्ञान की अन्तिम कसौटी 'मिथ्याकरण' है। उन्होंने अपने ये विचार 'वैज्ञानिक अन्वेषण के तर्क' (1934) नामक अपनी प्रसिद्ध कृति में व्यक्त किये और इनका विस्तृत विवेचन 'अनुमान और खंडन' (1963) नामक ग्रंथ में किया है। उन्होंने इन ग्रंथों में वैज्ञानिक ज्ञान के स्वरूप के बारे में तार्किक प्रत्यक्षवादियों के इस विचार का खंडन किया है कि समस्त ज्ञान तात्कालिक अनुभव पर आश्रित होता है तथा वैज्ञानिक ज्ञान की कसौटी उसके सत्यापन किये जाने की क्षमता है। यही कसौटी विज्ञान को तत्वमीमांसा या पराभौतिकी से अलग-थलग करती है। विज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञान की इन मान्यताओं के विपरीत, पॉपर ने कहा कि **'वैज्ञानिक ज्ञान की कसौटी उसकी सत्यापनशीलता नहीं है, अपितु उसकी 'मिथ्यापनशीलता'** है। अतः

Scanned with CamScanner

'पराभौतिकीय ज्ञान अर्थहीन नहीं होता, वह बहुधा विज्ञान का पूर्व संकेत देता है।' इसी प्रकार, पॉपर ने तार्किक प्रत्यक्षवादियों की 'आगमन पद्धति' अर्थात् 'विशिष्ट से सामान्य की ओर' से भी अपनी असहमति प्रकट करते हुए 'निगमन पद्धति' अर्थात् 'सामान्य से विशिष्ट की ओर' का समर्थन किया है। पॉपर का इस सम्बंध में तर्क है कि वैज्ञानिक अन्वेषण शुद्ध प्रेक्षण-अवलोकन से प्रारंभ नहीं किया जा सकता, बल्कि स्वयं प्रेक्षण-अवलोकन किन्हीं सैद्धान्तिक पूर्व-मान्यताओं से किसी न किसी रूप में निर्देशित होता है, अर्थात् हमारा प्रेक्षण चयनात्मक होता है। 'निगमन पद्धति' का समर्थन करते हुए पॉपर ने कहा कि यदि किसी विषय पर हमारे समक्ष दो प्राक्कल्पनाएं हों तो हमें उस प्राक्कल्पना को परीक्षण के लिये चुनना चाहिए जिसके 'मिथ्यापन' की संभावना अधिक हो ताकि उसका उत्तरोत्तर संशोधन करते हुए हम सत्य के निकट पहुँच सकें। पॉपर ने यथार्थवाद और 'पद्धतिवादी व्यक्तिवाद' का भी समर्थन किया है।

सामाजिक सिद्धान्त के क्षेत्र में पॉपर ने 'निर्धारणवाद' (डिटरमिनिज़्म) और 'ऐतिहासिकतावाद' (हिस्टॉरिसिज़्म) के साथ-साथ सत्तावादी राजनीति की कटु आलोचना की है। इन विषयों के बारे में उनके विचार उनके दो ग्रंथों में समाहित हैं। ये ग्रंथ हैं—'मुक्त समाज और उसके दुश्मन' (1945) और 'ऐतिहासिकतावाद की दरिद्रता', (1957)। उन्होंने ऐतिहासिकतावाद सम्बंधी **प्लेटो, हीगल और मार्क्स** के विचारों पर प्रबल प्रहार करते हुए लिखा है कि इनमें से प्रत्येक विचारक ने किसी न किसी रूप में सत्तावादी शासन प्रणाली का समर्थन किया है। **पॉपर ने कहा है कि विज्ञान और स्वतंत्रता दोनों का ऐसे समाज में विकास होता है जो मुक्त या खुला समाज हो और जिसमें नये विचारों को प्रश्रय दिया जाता हो।** पॉपर ने प्रामाणिक नियमों और ऐतिहासिक प्रवृतियों में अंतर बताते हुए कहा है कि ऐसा कोई नियम नहीं हो सकता जो सम्पूर्ण ऐतिहासिक प्रक्रिया की व्याख्या कर सकता हो क्योंकि प्रत्येक ऐतिहासिक परिवर्तन अपने आप में एक अनुपम एवं विशिष्ट घटना होती है। तथाकथित ऐतिहासिक नियम अधिकाधिक किसी ऐतिहासिक प्रवृति का संकेत मात्र देते हैं; वे सही अर्थ में प्रामाणिक नियम नहीं होते।

पॉपर के अनुसार, समाजों का संगठन दार्शनिक तर्क-वितर्क की भांति होना चाहिये, उनके बारे में प्रश्न खड़े किये जाने और अनुमान लगाये जाने की गुंजाइश होनी चाहिये। सामाजिक सुधार और सामाजिक पुनर्निर्माण के बारे में पॉपर की यह मान्यता रही है कि **सामाजिक सुधार विशाल आधार पर नियोजित सामाजिक परिवर्तनों द्वारा नहीं किये जा सकते, अपितु सामाजिक सुधार टुकड़ों-टुकड़ों में छोटे आधार पर ही संभव है।** चूंकि मानवीय ज्ञान हमेशा अपूर्ण रहता है, अतः किसी भी मानवीय क्रिया के ऐसे दुष्परिणामों का खतरा बना रहता है जिसका हमें पहले से कोई अनुमान नहीं होता। सार रूप में, पॉपर ने सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में क्रांति के स्थान पर क्रमिक सुधार को अधिक उपयुक्त माना है। वास्तव में, पॉपर का यह विचार अत्यन्त विवाद का विषय है। क्रांति के समर्थक यह मानते हैं कि क्रमिक सुधार के द्वारा सामाजिक विषमताओं में कोई यथार्थ अंतर नहीं आ पाता है। किन्तु क्रांति के विरोधी क्रांति से जुड़े हुए रक्तपात, हिंसा और उत्पीड़न का किसी मूल्य पर समर्थन नहीं करते।

Scanned with CamScanner

पॉपर के विज्ञान सम्बन्धी विचारों को चुनौतियां देकर यह कहा गया है कि उनके विचार कृत्रिम और अस्वभाविक हैं, क्यों कि व्यावहारिक रूप में वैज्ञानिक अपने विचारों का बचाव परीक्षण (सत्यापन) की प्रक्रिया द्वारा करते हैं, न कि खण्डन-मण्डन की प्रक्रिया द्वारा। वे विद्यमान वैचारिक रूपांकन (पेराडाइम्स) का भंजन नहीं करते, अपितु उसे बनाये रखने का प्रयास करते हैं। नियोजित सामाजिक परिवर्तन की सीमाओं सम्बंधी उनके विचारों की भी यह कह कर आलोचना की गई है कि उनके विचार इस बारे में अत्यंत रूढ़िवादी हैं।

प्रमुख कृतियाँ :

- The Logic of Scientific Discovery, (1934)
- The Open Society and Its Enemies, (1945)
- The Poverty of Historicism, (1957)
- Conjuctures and Refutations : The Growth of Scientific Knowledge, (1963)
- Of Clouds and Clocks, (1966)
- Objective Knowldge, (1972)
- Unended Quest, (1974)
- The Open Universe, (1982)
- Quantum Theory and the Schism in Physics, (1982)
- Realism and the Aim of Science, (1983)

Scanned with CamScanner